17 जून 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मार्थी का एकमात्र कर्त्तव्य समस्त जगत पर से दृष्टि हटाकर एकमात्र त्रैकालिक ध्रुव निज शुद्धात्मतत्त्व पर ही दृष्टि केन्द्रित करना है।

ह्न सत्य की खोज, पृष्ठ-142

वर्ष : 31, अंक : 06 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जून (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

40 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

*** देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 1352 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित। * प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 17 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित। * शिविर में लगभग 42 विद्वानों का समाज को लाभ मिला। * बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में 380 एवं बाल कक्षाओं में 157 विद्यार्थी सम्मिलित । * शिविर में 80 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 2240 घण्टों के सी.डी. व कैसिट्स बिके।**

तीर्थधाम मंगलायतन (अलीगढ-उ. प्र.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं तीर्थधाम मंगलायमन द्वारा दिनांक 18 मई से 4 जून, 2008 तक आयोजित 42 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

उद्घाटन के समाचार जून (प्रथम) अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं।

प्रात: कालीन प्रवचन ह्न प्रतिदिन प्रात: आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सी.डी.प्रवचन के बाद अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के समयसार ग्रंथाधिराज की गाथा 18 से 25 तक मार्मिक प्रवचन हुये।

रात्रि कालीन प्रवचन ह्न रात्रिकालीन प्रवचनों के क्रम में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. राकेशजी शास्त्री मंगलायतन, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित देवेन्द्रजी जैन मंगलायतन, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित सुनीलजी शास्त्री जैनापुरे राजकोट, पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली एवं श्री पवनजी जैन मंगलायतन के विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

दोपहर की व्याख्यानमाला में ह्न पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचंदजी द्रोणगिरि, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री काटोल, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित नरेन्द्रजी जबलपुर, ब्र. विनोदजी जैन खेकड़ा, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी सेठी जयपुर, पण्डित सुधीरजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित राकेशजी शास्त्री लिधौरा, पण्डित निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, डॉ. सतीशजी अलीगढ़, पण्डित महावीरप्रसादजी अजमेरा एवं पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

प्रशिक्षण कक्षायें ह्न बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक एवं शिक्षण पद्धति की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री व पण्डित कोमलचन्दजी टडावालों ने ली।

प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं में ह्न पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलजी जैन जैनापुरे राजकोट, पण्डित अशोकजी शास्त्री सोनागिर, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित नन्दकिशोरजी शास्त्री कोटोल, श्री महेशजी भोपाल, डॉ. सतीशजी शास्त्री अलीगढ, पण्डित सुधीरजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, श्रीमती रंजनाजी बंसल अमलाई, श्रीमती स्वर्णलताजी जैन मंगलायतन एवं श्रीमती लताजी जैन देवलाली का सहयोग प्राप्त हुआ।

प्रौढ़ कक्षायें ह्न नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्रीदेवलाली, **गुणस्थान विवेचन** की कक्षा ब्र. यशपालजी जैन जयपुर एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री जयपुर, **मोक्षमार्ग प्रकाशक** की कक्षा पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, **नियमसार** की कक्षा पण्डित देवेन्द्रजी मंगलायतन, **तत्त्वार्थसूत्र** की कक्षा पण्डित मनीषजी शास्त्री खतौली, **द्रव्यसंग्रह** की कक्षा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं **रहस्यपूर्ण चिट्ठी** की कक्षा पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने ली।

प्रात: 5 बजे की **प्रौढ़ कक्षा** में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन एवं पण्डित राकेशजी शास्त्री मंगलायतन का लाभ मिला। **(शेष पृष्ठ-4 पर...)**

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में 3 से 12 अगस्त तक एवं 5 से 14 अक्टूबर तक आयोजित शिविरों में अवश्य पधारें।

सम्पादकीय - 8

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

आचार्य कुन्दकुन्द ने नियमसार गाथा ५६ से ६० तक पंच महाव्रतों का स्वरूप इसप्रकार कहा है ह्न

१. जीवों के कुल, योनि, जीवस्थान, मार्गणास्थान आदि जानकर, उनके आरम्भ में निवृत्तिरूप परिणाम करना **अहिंसा महाव्रत** है।

२. राग, द्वेष अथवा मोह से होनेवाले असत्य वचन के परिणाम को छोड़ना **सत्य महाव्रत** है।

३. ग्राम, नगर या वन में परायी वस्तु को देखकर, उसे ग्रहण करने का भाव छोड़ना **अचौर्य महाव्रत** है।

४. स्त्रियों का रूप देखकर, उनके प्रति वांछाभाव की निवृत्ति करना अथवा मैथुन संज्ञारहित परिणाम होना ह्न **ब्रह्मचर्य महाव्रत** है।

५. निरपेक्ष भावनापूर्वक एक मिथ्यात्व, चार कषायें, नौ नोकषायें इस तरह चौदह प्रकार का अंतरंग परिग्रह एवं दस प्रकार के बाह्य परिग्रहों के त्यागरूप चारित्र को धारण करना **अपरिग्रह महाव्रत** है।

पाँच समिति का स्वरूप बताते हुए कहा है कि ह्न 'सम्यक् अयन अर्थात् सम्यक्प्रवृत्ति को समिति कहते हैं। गमन आदि क्रियाओं में सम्यक् प्रवृत्ति करना समिति है। ये भी ईर्या, भाषा, एषणा, आदान-निक्षेपण और प्रतिष्ठापना समिति के भेद से पाँच होती हैं।'

पण्डित टोडरमलजी ने कहा है कि 'मुनियों के किंचित् राग होने पर आहार, विहार और निहार के निमित्त गमनादि क्रिया होती है, वहाँ उन क्रियाओं में अति आसक्तता के अभाव में प्रमादरूप प्रवृत्ति नहीं होती तथा अन्य जीवों को दु:खी करके अपना प्रयोजन नहीं साधते। इसलिए स्वयमेव ही दया पलती है। इसप्रकार यह सच्ची समिति है।'

यहाँ ज्ञातव्य है कि ह्न 'सम्यग्दृष्टि को समिति में जितने अंश में वीतरागभाव है, उतने अंश में संवर है और जितने अंश में राग है, उतने अंश में शुभ बन्ध है।

मंदकषायी द्रव्यलिंगी पहले गुणस्थानवर्ती मुनि के भी शुभोपयोग रूप समिति होती है, किन्तु वह संवर का कारण नहीं है। जबकि तत्त्वार्थसूत्र के नवें अध्याय में समिति को संवर के कारणों में गिना है, इसका कारण यह है कि जैसे सम्यग्दृष्टि के वीतरागता के अनुसार पाँच समिति संवर का कारण होती हैं; परन्तु उनके भी जितने अंश में राग है, उतने अंश में वे आस्रव का भी कारण होती हैं। अत: संवर अधिकार में संवर की मुख्यता होने से समिति को संवर के कारणरूप से वर्णन किया है और इसी तत्त्वार्थसूत्र के छठवें अध्याय में आस्रव की मुख्यता है, अत: वहाँ समिति में जो राग अंश है, उसे आस्रव के कारणरूप से वर्णन किया है।

समिति में चारित्र का मिश्ररूप भाव है ह्न ऐसा भाव सम्यग्दृष्टि के होता है, उसमें आंशिक वीतरागता है और आंशिक राग है। जिस अंश में वीतरागता है, उस अंश के द्वारा तो संवर ही होता है और जिस अंश में सरागता है, उस अंश के द्वारा बंध ही होता है। सम्यग्दृष्टि के ऐसे मिश्ररूप भाव से तो संवर और बन्ध ह्न ये दोनों कार्य होते हैं; किन्तु अकेले राग के द्वारा ये दो कार्य नहीं हो सकते; इसलिए अकेले प्रशस्त राग से पुण्यास्रव भी मानना और संवर-निर्जरा भी मानना भ्रम है।

मिश्ररूप भाव में भी यह सरागता है और यह वीतरागता है ह्न ऐसी यथार्थ पहचान सम्यग्दृष्टि के ही होती है। इसीलिए वे अवशिष्ट सरागभाव को हेयरूप से श्रद्धान करते हैं। मिथ्यादृष्टि को सरागभाव और वीतरागभाव की यथार्थ पहिचान नहीं है, इसलिए वे सरागभाव में संवर का भ्रम करके प्रशस्त रागरूप कार्यों का उपादेयरूप श्रद्धान करते हैं।

नियमसार गाथा ६१ से ६५ में ही आचार्य कुन्दकुन्द ने समितियों का स्वरूप इसप्रकार बताया है ह्न

१. जो श्रमण प्रासुक मार्ग पर दिन में धुरा प्रमाण (चार हाथ) आगे देखकर चलते हैं, उन्हें **ईर्या समिति** होती है।

२. जो श्रमण चुगली, हास्य, कर्कशभाषा, परनिन्दा और आत्म-प्रशंसारूप वचन का परित्यागी होकर स्व-पर हितरूप वचन बोलते हैं, उन्हें **भाषा समिति** होती है।

३. जो श्रमण पर के द्वारा दिया गया, कृत-कारित-अनुमोदना रहित, प्रासुक रूप ४६ दोष रहित सम्यक् आहार को ग्रहण करते हैं, उन्हें **एषणा समिति** होती है।

४. जो श्रमण पुस्तक, कमण्डलु आदि उठाने-रखने आदि संबंधी सत्प्रयत्न परिणाम करते हैं, उन्हें **आदाननिक्षेपण समिति** होती है।

५. जो श्रमण पर के विरोधरहित, निर्जन और प्रासुक भूमिप्रदेश में मलादि का त्याग करते हैं, उन्हें **प्रतिष्ठापन समिति** होती है।

इन्द्रिय निरोध का स्वरूप बताते हुए छहढालाकार पण्डित दौलतरामजी ने छठवीं ढाल में कहा है ह्न

रस रूप गंध तथा फरस अरु शब्द शुभ असुहावने।
तिनमें न राग विरोध पञ्चेन्द्रिय-जयन पद पावने॥

मूलाचार में पाँच इन्द्रिय-निरोध का वर्णन निम्नप्रकार किया है ह्न

१. जीव और अजीव से उत्पन्न हुए एवं कठोर, कोमल आदि आठ भेदों से युक्त सुख और दु:खरूप स्पर्श में मोह-रागादि नहीं करना, **स्पर्शेन्द्रिय-निरोध** है।

२. खाद्य, स्वाद्य, लेय एवं पेयरूप चारों प्रकार के अशन जो पंच रसयुक्त, प्रासुक, निर्दोष, रुचिकर अथवा अरुचिकर पर के द्वारा दिया गया हो, उस आहार में लम्पटता नहीं होना **रसनेन्द्रिय निरोध** है।

३. प्राकृतिक तथा पर-निमित्तिक गंध में राग-द्वेष नहीं करना, **घ्राणेन्द्रिय निरोध** है।

४. सचेतन व अचेतन पदार्थों की क्रिया में आकार और वर्ण में प्रिय-अप्रिय लगनेरूप राग-द्वेष का त्याग करना **चक्षुरिन्द्रिय निरोध** है।

५. वीणा आदि यंत्रों से उत्पन्न हुए शब्दों को सुनकर राग-द्वेष नहीं करना **कर्णेन्द्रिय निरोध** है।

छह आवश्यक के विषय में आचार्यश्री ने कहा ह्न

मुनियों को अवश्य करने योग्य कार्यों को आवश्यक कहते हैं। सर्व

कर्म के निर्मूलन करने में समर्थ ऐसे नियम–विशेष को पालन करने को आवश्यक कहते हैं। जो कषाय, राग–द्वेष आदि के वशीभूत न हो, वह अवश है, उस अवश का जो आचरण है, वह आवश्यक है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने कहा है ह्न जो आत्मा में रत्नत्रय का आवास कराती हैं, वे छहों क्रियाएँ आवश्यक हैं।

आवश्यकों का संक्षिप्त स्वरूप इसप्रकार है ह्न

समता सम्हारें, थुति उचारैं, वन्दना जिनदेव को।
नित करैं श्रुतरति, करैं प्रतिक्रम, तजै तन अहमेव को।।

समता धारण करना, जिनेन्द्रदेव की स्तुति करना, वंदना करना, शास्त्र–पठन में रुचि, प्रतिक्रमण करना तथा कायोत्सर्ग करना।

मुनियों के षट् आवश्यक का वर्णन करते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न

१. जीवन–मरण, लाभ–अलाभ, संयोग–वियोग, मित्र–शत्रु तथा सुख–दु:ख इत्यादि में समभाव होना समता या सामायिक आवश्यक है।

२. ऋषभ आदि तीर्थंकरों के नाम का कथन और गुणों का कीर्तन करके तथा उनकी पूजा करके, उनको मन, वचन, कायपूर्वक नमस्कार करना **स्तवन आवश्यक** है।

३. अरहंत, सिद्ध और उनकी प्रतिमा तथा तप, श्रुत या गुणों में बड़े गुरु और स्वगुरु का, कृतिकर्मपूर्वक अथवा बिना कृतिकर्म के मन–वचन–कायपूर्वक प्रणाम करना **वन्दना आवश्यक** है।

४. निन्दा और गर्हापूर्वक, मन–वचन–काय के द्वारा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के विषय में किये गये अपराधों का शोधन करना, **प्रतिक्रमण** है।

५. भविष्यकाल में आने वाले नाम, स्थापना आदि छहों अयोग्य कर्म का मन–वचन–काय से वर्जन करना, प्रत्याख्यान आवश्यक है।

६. दैवसिक, रात्रिक और नियमरूप क्रियाओं में, आगम में कथित प्रमाण के द्वारा एवं निर्धारित काल में जिनेन्द्रदेव के गुणों के चिन्तवन सहित शरीर से ममत्व का त्याग करना, **कायोत्सर्ग आवश्यक** है।

शेष 7 गुणों में प्रथम केशलोंच मूलगुण के संबंध में कहा है ह्न

'हाथों से मस्तक और दाढी–मूंछ के बालों को उखाड़ना, लोच या केशलोंच कहलाता है। यह केशलोंच दिन में, प्रतिक्रमण सहित एवं उपवासपूर्वक किया जाता है। इसकी अवधि क्रमश: दो, तीन, चार माह है; जिसे उत्तम, मध्यम और जघन्य कहा जाता है।'

केशलोंच करने का प्रयोजन यह है कि सम्मूर्च्छन जूं आदि उत्पन्न न हो जावें तथा शरीर से रागभाव आदि को दूर करने के लिए, अपनी शक्ति को प्रगट करने के लिए, सर्वोत्कृष्ट तपश्चरण के लिए और निर्ग्रन्थ मुद्रा आदि के गुणों को बतलाने के लिए, हाथ से मस्तक तथा दाढ़ी–मूंछ के केशों को उखाड़ा जाता है।

बालों को हाथों से ही उखाड़ते हैं। उस्तरा–कैंची इत्यादि से नहीं, क्योंकि उस्तरा आदि से केशों को दूर करने में दैन्यवृत्ति होती है, याचना करनी पड़ती है और परिग्रह रखना पड़ता है; किन्तु हाथ से केशों को दूर करने में ये दोष नहीं आते। यही कारण है कि स्वाधीनवृत्ति वाले मुनिराज हाथ से ही केशलोंच करते हैं।

२. अचेलकत्व ह्न श्रमण अवस्था में सम्पूर्ण परिग्रह को चेल शब्द से कहा गया है। नहीं है चेल जिसके, वे अचेलक हैं, अचेलक का भाव अचेलकत्व है अर्थात् सम्पूर्ण वस्त्र, आभरण इत्यादि का परित्याग करना, अचेलक्य व्रत है। वस्त्र और वल्कलों से शरीर को नहीं ढंकना, भूषण, अलंकार और परिग्रह से रहित होना अचेलकत्व मूल गुण है।

किसी भी प्रकार के वस्त्र से शरीर को ढंकने से उन वस्त्रों के आश्रित हिंसा अनिवार्य है; उनको संभालना, धोना, सुखाना, फट जाने पर दूसरों से याचना आदि के प्रसंग अवश्य आयेंगे। इन कारणों से साधु को ध्यान और अध्ययन में बाधा अवश्य आयेगी; इसलिए नग्नवेश धारण करना, यह आचेलक्य मूलगुण है।

अशरीर सिद्धपद की साधना में तत्पर मुनिराज को शरीर साफ–सुथरा रखने की, उसे वस्त्र से ढांकने इत्यादि की व्यवस्था करने की वृत्ति नहीं होती। यदि शरीर को वस्त्र से ढांकने की वृत्ति उत्पन्न हो जाये तो मुनिपना नहीं रहता।

एक निश्चयाभासी श्रोता बीच में बोला ह्न 'अध्यात्मदृष्टि में मुनि को वस्त्र हों या नहीं हों, इससे क्या होता है ? वस्त्र तो परद्रव्य है न ?'

इसका समाधान करते हुए आचार्य श्री ने कहा 'जिसको अध्यात्म की दृष्टि प्राप्त होती है, उसको उतने प्रमाण में राग भी छूट जाता है और जहाँ जितने अंश में राग कम हो जाता है, वहाँ स्वेच्छापूर्वक उसप्रकार का बाह्य परिग्रह भी कम हो जाता है।' अध्यात्म का ऐसा सहज सुमेल होता है। क्रोधादि से तीन चौकड़ी के अभाव में मोक्ष के साधक मुनिराज की अंतरंग दशा में अध्यात्म की कोई अद्भुत खुमारी होती है। उस दशा में वस्त्रादि धारण करने का राग स्वत: छूट जाता है। इसकारण वे निर्वस्त्र ही रहते हैं। जिसे अध्यात्म की दृष्टि प्राप्त नहीं है, वही ऐसे कुतर्क करता है।

भगवती आराधना में अचेलकत्व अर्थात् नग्नता मूलगुण के अनेक लाभ बताये गये हैं ह्न १. सर्व परिग्रह का परिहार होने से त्यागधर्म में प्रवृत्ति होती है। २. आकिंचन्य धर्म में प्रवृत्ति होती है। ३. आरम्भ का अभाव होने से असंयम का अभाव होता है। ४. असत्य भाषण का कारण ही नष्ट हो जाता है। ५. लाघवगुण अर्थात् विनम्रता होती है। ६. अचौर्यव्रत की पूर्णता प्राप्त होती है। ७. रागादि का त्याग होने से परिणामों में निर्मलता आती है। ८. ब्रह्मचर्य का निर्दोष रक्षण होता है। ९. उत्तमक्षमागुण प्रगट होता है। १०. उत्तममार्दवगुण प्रगट होता है। ११. आर्जव गुण प्रगट होता है। १२. शौचगुण प्रगट होता है। १३. उपसर्ग और परिषह सहन करने की सामर्थ्य प्रगट होती है। १४. घोर तप का पालन होता है। १५. संयम शुद्धि होती है। १६. इन्द्रिय–विजय गुण प्रगट होता है। १७. लोभादिक कषायों का अभाव होता है। १८. परिग्रह–त्याग गुण प्रगट होता है। १९. आत्मा निर्मल होता है। २०. शरीर के प्रति उपेक्षा प्रगट होती है। २१. स्ववशता गुण प्रगट होता है। २२. मन की विशुद्धि प्रगट होती है। २३. निर्भयता गुण प्रगट होता है। २४. अपना बल वीर्य प्रगट होता है। २५. तीर्थंकरों के द्वारा आचरित गुण प्राप्त होता है।

अधिक क्या कहें ? जितने तीर्थंकर हो चुके हैं और होनेवाले हैं, वे सब वस्त्र रहित होकर ही तप करते हैं। जिन प्रतिमायें और तीर्थंकरों के अनुयायी गणधर भी निर्वस्त्र ही होते हैं। **(क्रमश:)**

(पृष्ठ–1 का शेष...)

बालवर्ग की कक्षाओं का संचालन पण्डित बाबूभाई मेहता एवं श्रीमती शुद्धात्मप्रभाजी टड़ैया के निर्देशन में किया गया; जिसमें लगभग 157 छात्र सम्मिलित हुये, इन छात्रों की शिविर के दौरान दो बार परीक्षायें भी लीं गई।

ज्ञातव्य है कि अभ्यास कक्षायें हिन्दी एवं मराठी भाषाओं में संचालित होती थी।

शिविर के दौरान एक दिन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित पश्चाताप खण्डकाव्य की सी.डी.उन्हीं के सान्निध्य में चलाई गई, जिसे उपस्थित जन–समुदाय ने मंत्र मुग्ध होकर सुना तथा मुक्त कंठ से इसकी सराहना की। इसी पश्चाताप खण्डकाव्य के आधार से पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा संगीतमय कथा का आयोजन किया गया, जिसने उपस्थित शिविराथिर्यों को भाव–विभोर कर दिया।

विमोचन : शिविर में जैन के.जी. भाग–6,7 (हिन्दी व अंग्रेजी), प्रवचनसार (ज्ञान–ज्ञेय तत्त्व प्रबोधिनीटीका), चलते–फिरते सिद्धों से गुरु, जान रहा हूँ देख रहा हूँ, धन्य मुनिराज हमारे हैं आदि पुस्तकों के अतिरिक्त पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा द्वारा रचित समयसार वचनिका नामक विशिष्ट ग्रन्थ का विशेष समारोह में उत्साहपूर्वक विमोचन किया गया।

प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन एवं दीक्षान्त समारोह ह्न बुधवार, दिनांक 4 जून को दोपहर में आयोजित इस समारोह में अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन श्री संजयजी शास्त्री ने किया। आभार प्रदर्शन श्री पवन जैन ने किया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के दीक्षांत भाषण के पश्चात् पण्डित कोमलचन्दजी जैन द्रोणगिरि एवं पण्डित कमलचंदजी जैन पिड़ावा ने प्रशिक्षण कक्षाओं की रिपोर्ट एवं परीक्षा–परिणाम प्रस्तुत किया।

बालबोध एवं प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों के अतिरिक्त उत्तीर्ण समस्त प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र एवं ग्रन्थ भेंट कर पुरस्कृत किया गया।

जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 3 से 14 मई, 08 तक श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा भिण्ड के संयुक्त तत्त्वावधान में बाल ब्र. श्री रवीन्द्रकुमारजी अमायन एवं बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में चतुर्थ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इसके अन्तर्गत देवनगर, भिण्ड, अमायन, मौ, मेहगाँव, गोहद, गोरमी, पोरसर, अम्बाह, पालनपुर, ग्वालियर, भितरवार, करैरा, कोलारस, रन्नौद, लुकवासा, बदरवास, शिवपुरी, खनियांधाना, फिरोजाबाद, मैनपुरी, इटावा, ललितपुर आदि 71 स्थानों पर शिविरों का आयोजन किया गया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर के 40, श्री आदिनाथ विद्या निकेतन अलीगढ़ के 28, श्री अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय बाँसवाड़ा के 16 एवं अन्य स्थानों से पधारे कुल 142 विद्वानों का सहयोग प्राप्त हुआ।

श्रुत पंचमी महोत्सव सम्पन्न

खतौली (उ. प्र.) : यहाँ दिनांक 5 से 8 जून तक श्रुत पंचमी महोत्सव धूम–धाम से मनाया गया।

इस अवसर पर **सिद्धान्तरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल** जयपुर के प्रतिदिन प्रात: सरल शैली में पूजन की जयमाला व रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् समयसार के कर्त्ताकर्म–अधिकार पर हुये मार्मिक प्रवचनों का समाज ने भरपूर लाभ लिया। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन रात्रि में वीतराग–विज्ञान पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

इसी प्रसंग पर प्रतिदिन दोपहर में श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा छहढाला की विशेष कक्षा ली गई।

इस अवसर पर आयोजित नवलब्धि विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

दिनांक 8 जून को विशाल जिनवाणी शोभायात्रा का आयोजन हुआ। पालकी शोभायात्रा में 56 कुमारियों सहित 101 इन्द्राणियों एवं सैंकडों इन्द्रों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया, जिससे महती धर्म प्रभावना हुई।

शोभायात्रा के पश्चात् श्री सुभाषचन्द जैन महलकावालों के निवास पर मंगल कलश विराजमान किया गया।

सम्पूर्ण महोत्सव में स्थानीय विद्वान पण्डित सोनूजी शास्त्री, श्री कल्पेन्द्र जैन, श्री नरेन्द्र जैन आदि फैडरेशन के सभी सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा।

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

खड़ैरी (म. प्र.) : यहाँ दिनांक 28 मई से 4 जून, 08 तक जैन युवा शास्त्री परिषद, खड़ैरी द्वारा बाल संस्कार शिविर एवं रत्नत्रय विधान का आयोजन किया गया।

शिविर में पूजन–विधान, बाल कक्षा, प्रौढ कक्षा, जिनेन्द्र भक्ति, प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्रतिदिन 11 घण्टे चलनेवाले धार्मिक वातावरण का लाभ स्थानीय एवं बाहर गाँव से पधारे लगभग 600 साधर्मियों ने लिया।

इस अवसर पर जयपुर से पधारे पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा प्रतिदिन दोनों समय सैद्धान्तिक विविध विषयों पर मार्मिक प्रवचनों के साथ–साथ दोपहर में नयचक्र की कक्षा ली गई।

आपके अतिरिक्त पण्डित सुदीपकुमारजी बीना के प्रवचन, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली एवं पण्डित निलयजी शास्त्री सरदारशहर की छहढाला पर तथा पण्डित मनीषजी कहान की लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका पर कक्षा का लाभ मिला।

बाल कक्षायें पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा, पण्डित संभवजी शास्त्री नैनधरा, पण्डित दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ एवं पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मड़देवरा ने लीं। रात्रि में प्रतिदिन अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

विधि–विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा ने सम्पन्न कराये। शिविर के संचालन में युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन का सक्रिय सहयोग रहा। ज्ञातव्य है कि इस छोटे से ग्राम में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 16 शास्त्री विद्वान हैं।

फैडरेशन का जैन युवा सम्मेलन सम्पन्न

लूणदा (उदयपुर) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का उदयपुर संभागीय जैन युवा सम्मेलन लूणदा में दिनांक 8 जून, रविवार को सम्पन्न हुआ। फैडरेशन के प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसाद जैन ने बताया कि कार्यक्रम में राजस्थान प्रदेश अध्यक्ष डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल का कुन्दकुन्द कहान वीतराग–विज्ञान शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल दलावत, महामंत्री श्री राजमल कोदणोत, मंत्री कचरुलाल मेहता ने मेवाड़ी पगड़ी, माला एवं शॉल ओढाकर स्वागत किया।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. उत्तमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि शीघ्र ही युवा फैडरेशन पूरे प्रदेश में गाँव–गाँव ढाणी–ढाणी वीतराग–विज्ञान पाठशाला का संचालन करेगा। इसमें युवा कक्षा, प्रौढ कक्षा और युवाओं को स्वाध्याय प्रशिक्षण दिया जायेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने की। उन्होंने बताया कि फैडरेशन द्वारा प्रथम बार कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कैम्प का आयोजन 20 जुलाई को किशनगढ में होने जा रहा है, जिसमें राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल एवं राष्ट्रीय मंत्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल प्रशिक्षण देंगे।

सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रदेश के महामंत्री श्री राजकुमारजी जैन दर्शनाचार्य बांसवाडा पधारे। साथ ही बांसवाडा के जिला प्रभारी पण्डित रितेश डडूका भी उपस्थित थे।

एक दिवसीय इस सम्मेलन में उदयपुर संभाग की विविध शाखाओं में मुमुक्षु मण्डल युवा फैडरेशन, मुमुक्षु मण्डल महिला फैडरेशन, महिला फैडरेशन नेमिनाथ कॉलोनी, महिला फैडरेशन सैक्टर–11, युवा फैडरेशन लूणदा, आदर्शनगर, गायरियावास, सेमारी, कूण, जगत, डबोक, टोकर, साकरोदा, कुरावड आदि शाखाओं ने भाग लिया।

संचालन फैडरेशन के उदयपुर जिला प्रभारी पण्डित खेमचन्द जैन ने एवं मंगलाचरण प्रदेश प्रचार–मंत्री श्री गणतंत्र जैन बांसवाडा ने किया।

राजस्थान प्रदेश के पदाधिकारी/कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण शिविर किशनगढ में

अ. भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश एवं शाखाओं के पदाधिकारियों का एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 20 जुलाई, 08 को पहली बार किशनगढ (अजमेर) में आयोजित होने जा रहा है।

इस प्रशिक्षण शिविर में आनेवाले पदाधिकारियों को संगठन की कार्यप्रणाली का प्रशिक्षण राष्ट्रीय महामंत्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मंत्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं महिला प्रकोष्ठ की संयोजिका डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा दिया जायेगा।

इस कार्यक्रम के आयोजनकर्त्ता फैडरेशन के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी हैं।

ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व राजस्थान प्रदेश के अध्यक्ष एवं अन्य प्रदेश पदाधिकारी सभी शाखाओं के चुनाव एवं नवीन शाखाओं के गठन का कार्य सम्पन्न करेंगे।

ह्न डॉ. उत्तमचन्द भारिल्ल, अजमेर ह्न प्रदेशाध्यक्ष (राज.)
जिनेन्द्र शास्त्री, उदयपुर ह्न प्रदेश प्रतिनिधि (राज.)

फैडरेशन की कार्यकारिणी गठित

भोपाल (म. प्र.) : यहाँ दिनांक 13 अप्रैल, 08 को फैडरेशन के नव निर्वाचित **अध्यक्ष–अरुण वर्धमान** ने अपनी नवीन कार्यकारिणी का मनोनयन निम्नप्रकार किया ह्न

कार्याध्यक्ष ह्न श्री जितेन्द्र सोगानी, **उपाध्यक्ष** ह्न श्री अरविंद सोगानी **उपाध्यक्ष** ह्न श्री राकेश दिवाकर, **महामंत्री** ह्न श्री अरविंद जैन (बामौरा) **संयुक्त महामंत्री** ह्न श्री उमरेश सिंघई, **कोषाध्यक्ष** ह्न श्री रविप्रकाश जैन **संगठन मंत्री** ह्न श्री अभिषेक जैन (प्रिन्टर्स), **प्रचार मंत्री** ह्न श्री संजय जैन (प्रिन्टर्स), **सांस्कृतिक मंत्री** ह्न श्री अनुराग जैन, **सह सांस्कृतिक मंत्री** ह्न श्री स्मित जैन, **कार्यकारिणी सदस्य** ह्न श्री वीरेन्द्र जैन हुण्डी, श्री अशोक जैन, श्री मोहित बडकुल, श्री वीरकुमार जैन, श्री सुकान्त जैन, श्री सौरभ सौगाणी, श्री अंकुर बडकुल, श्री संजीव जैन, श्री अनुभव सौगाणी, श्री दीपक जैन दलाल।

सभी निर्वाचित सदस्यों को जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

वैराग्य समाचार

1. **टीकमगढ (म.प्र.) निवासी श्रीमती पुष्पादेवी चौधरी ध.प. स्व. श्री सनतकुमारजी जैन** का विगत माह देहावसान हो गया है। आपने अपने निवास पर अनेक वर्षों तक पाठशाला एवं स्वाध्याय हेतु जगह प्रदान की एवं मंगलधाम निर्माण हेतु 3200 वर्गफीट जमीन दान में दी।

आपकी स्मृति में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को साहित्य की कीमत कम करने हेतु 1100/–रुपये प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद !

2. छतरपुर निवासी इंजी. सुनीलकुमार बडकुल की मातुश्री श्रीमती कान्ति देवी बडकुल का 25 मई को शांत परिणामों पूर्वक देहावसान हो गया है। आप स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में 100 रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

सिद्धचक्र मण्डल विधान सम्पन्न

घुवारा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 17 से 25 मई, 08 तक निर्माणाधीन जिनालय परिसर में सकल दिगम्बर जैन समाज, घुवारा द्वारा सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस मांगलिक प्रसंग पर राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम बांसवाडा व पण्डित संजयकुमारजी पुजारी खनियांधाना के प्रवचन एवं पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री की कक्षाओं का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। विधि–विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर के निर्देशन में पण्डित अंकितकुमारजी शास्त्री लूणदा एवं श्रीमती अर्चना जैन के सहयोग से सम्पन्न हुये।

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 1

पहला प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

मंगलाचरण

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग-विज्ञान।
नमौं ताहि जातैं भये, अरहंतादि महान।।

पण्डितों के पण्डित महापण्डित आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी और उनकी कालजयी क्रान्तिकारी कृति मोक्षमार्गप्रकाशक जैनदर्शन के अमूल्य रत्न हैं।

जिनागम को समझने में जो भूलें अज्ञानी जगत करता है, उन भूलों को निकालने वालों को पंडित कहा जाता है; पर पंडित टोडरमलजी उन पंडितों में हैं; जिन्होंने न केवल अज्ञानी जगत की भूलों को निकाला, अपितु जो अपने को जिनागम का अभ्यासी समझते हैं; फिर भी उसका मर्म नहीं समझ पाने से सद्धर्म को तो प्राप्त नहीं कर पाते, अपितु बाह्य क्रियाकाण्ड में उलझकर रह जाते हैं; उनके द्वारा की जाने वाली भूलों की ओर ध्यान दिलाकर उनका भी मार्गदर्शन किया है। मोक्षमार्गप्रकाशक के सातवें और आठवें अधिकार इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

यही कारण है कि मैं उन्हें पंडितों के पंडित कहता हूँ।

यद्यपि वे आचार्य नहीं थे, पर उन्होंने सत्साहित्य के क्षेत्र में आचार्यों के समान महान कार्य किया है; इसकारण उन्हें आचार्यकल्प कहा जाता है।

ऐसे पंडित तो इस लोक में बहुत मिलेंगे, जिन्होंने शास्त्रों को पढ़ा है; पर ऐसे पंडित मिलना दुर्लभ हैं, जिन्होंने शास्त्रों के साथ-साथ आत्मा को भी पढ़ा हो। कदाचित् ऐसे पंडित भी मिल जायेंगे कि जिन्होंने शास्त्रों के साथ-साथ आत्मा को भी पढ़ा हो; पर ऐसे पंडित मिलना अत्यन्त दुर्लभ हैं कि जिन्होंने शास्त्रों को पढ़ा हो, आत्मा को पढ़ा हो, आत्मानुभव किया हो और इस जगत को भी पढ़ा हो। पंडित टोडरमलजी उन पंडितों में हैं; जिन्होंने शास्त्रों को पढ़ा था, आत्मा को पढ़ा था, आत्मा का अनुभव किया था और जगत को भी पढ़ा था।

इसका प्रमाण मोक्षमार्गप्रकाशक का २२०वाँ पृष्ठ है, जिस पर उन्होंने लौकिकजनों की धर्माराधना का विकृत चित्र प्रस्तुत किया है।

उन्होंने लिखा है ह्न

''अब, इनके धर्म का साधन कैसे पाया जाता है सो विशेष बतलाते हैं ह्न

वहाँ कितने ही जीव कुलप्रवृत्ति से अथवा देखा-देखी लोभादि के अभिप्राय से धर्म साधते हैं, उनके तो धर्मदृष्टि ही नहीं है।

यदि भक्ति करते हैं तो चित्त तो कहीं है, दृष्टि घूमती रहती है और मुख से पाठादि करते हैं व नमस्कारादि करते हैं; परन्तु यह ठीक (इस बात का पता) नहीं है कि मैं कौन हूँ, किसकी स्तुति करता हूँ, किस प्रयोजन के अर्थ (लिये) स्तुति करता हूँ, पाठ में क्या अर्थ है, सो कुछ पता नहीं है।

तथा कदाचित् कुदेवादिक की भी सेवा करने लग जाता है; वहाँ सुदेव-गुरु-शास्त्रादि व कुदेव-गुरु-शास्त्रादिककी विशेष पहिचान नहीं है।

तथा यदि दान देता है तो पात्र-अपात्र के विचार रहित जैसे अपनी प्रशंसा हो, वैसे दान देता है।

तथा तप करता है तो भूखा रहकर महंतपना हो, वह कार्य करता है; परिणामों की पहिचान नहीं है।

तथा व्रतादिक धारण करता है तो वहाँ बाह्य क्रिया पर दृष्टि है; सो भी कोई सच्ची क्रिया करता है, कोई झूठी करता है; और जो अन्तरंग रागादिभाव पाये जाते हैं, उनका विचार ही नहीं है। तथा बाह्य में रागादि के पोषण के साधन करता है।

तथा पूजा-प्रभावनादि कार्य करता है तो वहाँ जिसप्रकार लोक में बड़ाई हो व विषय-कषाय का पोषण हो; उसप्रकार कार्य करता है। तथा बहुत हिंसादिक उत्पन्न करता है। सो यह कार्य तो अपने तथा अन्य जीवों के परिणाम सुधारने के अर्थ (लिये) कहे हैं। तथा वहाँ किंचित् हिंसादिक भी उत्पन्न होते हैं, परन्तु जिसमें थोड़ा अपराध हो और गुण अधिक हो; वह कार्य करना कहा है। सो परिणामों की तो पहिचान नहीं है और यहाँ अपराध कितना लगता है, गुण कितना होता है ह्न ऐसे नफा-टोटे का ज्ञान नहीं है व विधि-अविधि का ज्ञान नहीं है।

तथा शास्त्राभ्यास करता है तो वहाँ पद्धतिरूप प्रवर्तता है। यदि बाँचता है तो औरों को सुना देता है, यदि पढ़ता है तो आप पढ़ जाता है, सुनता है तो जो कहते हैं, वह सुन लेता है; परन्तु जो शास्त्राभ्यास का प्रयोजन है, उसे आप अन्तरंग में अवधारण नहीं करता।

ह्न इत्यादि धर्मकार्यों के मर्म को नहीं पहिचानता।

कितने तो जिसप्रकार कुल में बड़े प्रवर्तते हैं; उसीप्रकार हमें भी करना; अथवा दूसरे करते हैं; वैसा हमें भी करना; व ऐसा करने से हमारे लोभादिक की सिद्धि होगी ह्न इत्यादि विचार सहित अभूतार्थ धर्म को साधते हैं।

तथा कितने ही जीव ऐसे होते हैं जिनके कुछ तो कुलादिरूप बुद्धि है, कुछ धर्मबुद्धि भी है; इसलिये पूर्वोक्त प्रकार का धर्म का साधन करते हैं।''

उस समय अज्ञानी जगत में धर्म के नाम पर किसप्रकार की प्रवृत्तियाँ देखी जाती थी; उनका यह सजीव चित्रण है।

एक ही पृष्ठ में पंडितजी ने तथाकथित भक्तों, दानियों, तपस्वियों, ब्रतियों, पूजा-प्रभावना करनेवालों और शास्त्रों का अभ्यास करनेवालों का कच्चा चिट्ठा खोलकर रख दिया है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि आज भी समाज में उसीप्रकार की प्रवृत्तियाँ देखने में आ रही है। इससे यह स्पष्ट होता है कि अज्ञानियों की प्रवृत्तियाँ तो सदा और सर्वत्र एकसी ही होती हैं; इसलिए उनके सन्दर्भ में मार्गदर्शन करने के लिये महापंडित टोडरमलजी जैसे ज्ञानीजनों की आवश्यकता भी सदा और सर्वत्र रहती ही है।

मुक्ति के मार्ग पर प्रकाश डालने वाले इस मोक्षमार्गप्रकाशक नामक शास्त्र की रचना उस समय की जैननगरी जयपुर में विक्रम संवत् १८१८ से १८२४ के मध्य हुई थी।

मार्ग तो हमेशा खुला ही रहता है; परन्तु दिन में सूर्य के प्रकाश में उसपर आवागमन होने लगता है और रात्रि में घने अँधकार के कारण आवागमन अवरुद्ध–सा हो जाता है। समुचित प्रकाश की व्यवस्था होने पर थोड़ा–बहुत आवागमन चलता भी रहता है।

सर्वज्ञ भगवानरूपी सूर्य का अस्त तो हो ही गया है; अतः अब सन्तों, आचार्य भगवन्तों और ज्ञानी धर्मात्माओं द्वारा लिखित ग्रंथ (शास्त्र) रूपी दीपक ही उसपर प्रकाश डालते हैं। यह मोक्षमार्गप्रकाशक भी एक ऐसा ही दीपक (ग्रंथ) है कि जो इस कलिकाल में मुक्ति के मार्ग पर प्रकाश डाल रहा है और आगे भी डालता रहेगा।

पंडित टोडरमलजी ने ग्रंथ के आरंभ में ही इस बात को सयुक्ति प्रस्तुत किया है; इस ग्रन्थ के मोक्षमार्गप्रकाशकपने को सिद्ध किया है; इसकी आवश्यकता और उपयोगिता पर प्रकाश डाला है; जो मूलतः पठनीय है।

मोक्षमार्गप्रकाशक अर्थात् मुक्ति के मार्ग पर प्रकाश डालने वाला ग्रन्थ, दुःखों से मुक्त होने का उपाय बताने वाला ग्रन्थ।

जिसप्रकार हम दीपक से दीपक जलाते हैं; इसप्रकार हजारों दीपक जलने लगते हैं; पर वे अन्धकार का नाश सूर्य के समान पूरी तरह तो कर नहीं पाते; फिर भी मार्ग पूरी तरह अवरुद्ध नहीं होता, जगत का काम चलता ही रहता है। उसीप्रकार केवलज्ञानियों के अभाव में श्रुतकेवलियों ने इस परम्परा को आगे बढ़ाया। श्रुतकेवलियों के बाद आचार्य भूतबली, पुष्पदन्त और कुन्दकुन्दाचार्य जैसे आचार्यों ने महाग्रंथों रूपी बड़े–बड़े दीपक जलाये; उसके बाद भी आचार्यों, सन्तों और ज्ञानी गृहस्थों ने इस परम्परा को कायम रखा। इसप्रकार दीपकों से दीपक जलने की परम्परा आज तक चली आ रही है।

यद्यपि केवलज्ञानरूपी सूर्य जैसा प्रकाश तो नहीं रहा; पर घना अँधकार भी नहीं हो पाया और आज भी उन दीपकों के माध्यम से मुक्ति का मार्ग चल रहा है और चलता रहेगा।

यह मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र भी एक ऐसा ही दीपक है कि जिसके प्रकाश में आज भी अनेकानेक लोग मुक्ति के मार्ग पर चलने का सफल प्रयास कर रहे हैं और युगों–युगों तक करते रहेंगे।

इसके आरंभ में ही पंडितजी कहते हैं कि इस ग्रन्थ में जो कुछ भी मैं लिख रहा हूँ, उसमें मेरा कुछ भी नहीं है, सबकुछ भगवान महावीर की दिव्यध्वनि में समागत वस्तुस्वरूप ही है; जो जबसे अभीतक निर्बाध परम्परा से चला आ रहा है, और मेरे महाभाग्य से मुझे भी प्राप्त हो गया है।

वे मोक्षमार्गप्रकाशक के पृष्ठ ११ पर स्वयं लिखते है ह्न

''हमने इस काल में यहाँ अब मनुष्यपर्याय प्राप्त की। इसमें हमारे पूर्व संस्कार से व भले होनहार से जैनशास्त्रों के अभ्यास करने का उद्यम हुआ; जिससे व्याकरण, न्याय, गणित आदि उपयोगी ग्रन्थों का किंचित् अभ्यास करके टीकासहित समयसार, पंचास्तिकाय, प्रवचनसार, नियमसार, गोम्मटसार, लब्धिसार, त्रिलोकसार, तत्त्वार्थसूत्र इत्यादि शास्त्र और क्षपणासार, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, अष्टपाहुड़, आत्मानुशासन आदि शास्त्र और श्रावक–मुनि के आचार के प्ररूपक अनेक शास्त्र और सुष्ठुकथासहित पुराणादि शास्त्र ह्न इत्यादि अनेक शास्त्र हैं, उनमें हमारे बुद्धि अनुसार अभ्यास वर्तता है; उससे हमें भी किंचित् सत्यार्थपदों का ज्ञान हुआ है।

इस निकृष्ट समय में जैसे मंदबुद्धियों से भी हीन बुद्धि के धनी बहुत जन दिखायी देते हैं। उन्हें उन पदों का अर्थज्ञान हो, इस हेतु धर्मानुरागवश देशभाषामय ग्रन्थ रचने की हमें इच्छा हुई है, इसलिये हम यह ग्रन्थ बना रहे हैं। इसमें भी अर्थसहित उन्हीं पदों का प्रकाशन होगा। इतना तो विशेष है कि ह्न जिसप्रकार प्राकृत–संस्कृत शास्त्रों में प्राकृत–संस्कृत पद लिखे जाते हैं, उसीप्रकार यहाँ अपभ्रंश सहित अथवा यथार्थता सहित देशभाषारूप पद लिखते हैं; परन्तु अर्थ में व्यभिचार कुछ नहीं है।

इसप्रकार इस ग्रन्थपर्यंत उन सत्यार्थपदों की परम्परा वर्तती है।''

पण्डितजी के उक्त कथन से आत्मार्थी भाई–बहिनों को यह प्रेरणा मिलती है कि हमें किन–किन शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिये और यह भी समझ में आता है कि उन्होंने इस ग्रंथ की रचना किस भावना से की है।

इसप्रकार उन्होंने स्वयं इस मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र की प्रामाणिकता पर प्रकाश डाला है।

यह मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र पूर्ण नहीं हो पाया। यदि यह पूर्ण हो गया होता तो इसका स्वरूप कैसा होता ह्न इसकी कल्पना हम कर सकते हैं। मैंने पी.एच.डी. के लिए शोध करते समय इसकी एक रूपरेखा तैयार की थी। वह रूपरेखा मेरे शोधप्रबन्ध और मोक्षमार्गप्रकाशक की प्रस्तावना में दी गई हैं, जिसे विशेष जिज्ञासा हो, वे वहाँ से देख सकते हैं।

उक्त रूपरेखा मात्र मेरी कल्पना नहीं है; उसका ठोस आधार मोक्षमार्गप्रकाशक में १२ स्थानों पर लिखे गये वे वाक्य हैं कि जिनमें यह लिखा गया है कि इसका विशेष विवेचन हम आगे करेंगे। एक स्थान पर लिखा है कि इसकी चर्चा हम कर्माधिकार में करेंगे। इसका स्पष्ट संकेत यह है कि वे इस ग्रन्थ में एक कर्मों का स्वरूप बतानेवाला अधिकार भी लिखना चाहते थे।

यदि हम उक्त १२ बिन्दुओं पर गहराई से चिन्तन करें तो हम यह आसानी से समझ सकते हैं कि वे इस ग्रन्थ में क्या–क्या लिखना चाहते थे। अभी यह ग्रन्थ ३४९ पृष्ठों का है। यदि पूर्ण हो गया होता तो ४ हजार पृष्ठों से कम का नहीं होता। तब हम बड़े ही गौरव से कह सकते थे कि यदि जैनदर्शन को समझना है तो अकेले मोक्षमार्गप्रकाशक को ही पढ़ लीजिये, जैनदर्शन समझ में आ जायगा; क्योंकि उसमें वह सबकुछ होता जो जैनधर्म जानने के लिये आवश्यक है। **(क्रमशः)**

17 जून 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सुयश

- उपाध्याय वरिष्ठ (12th) का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत।
- छात्र जयेश जैन, उदयपुर 81.23% अंकों के साथ राजस्थान बोर्ड की मैरिट लिस्ट में तृतीय स्थान पर ।
- कुल 32 छात्रों में से 20 प्रथम व 12 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण।
- 7 छात्रों के 70% से अधिक अंक।

जयेशकुमार जैन
उदयपुर (राज.)
81.23 %

राहुलकुमार जैन
नौगांव (म. प्र.)
78.62 %

भावेशकुमार जैन
उदयपुर (राज.)
74.46 %

रजित जैन
भिण्ड (म. प्र.)
73.23 %

विवेक जैन
मड़देवरा (म. प्र.)
72.62 %

सूरज मगदुम
नान्द्रे (महा.)
71.54 %

अभिषेक जैन
कोलारस (म. प्र.)
70.15 %

उक्त सभी प्रतिभाशाली छात्रों को महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक शुभ कामनायें।

(आगामी कार्यक्रम...)

टोडरमल स्मारक में विशिष्ट कक्षायें

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 1 से 8 जुलाई तक ब्र. हेमचंदजी हेम'देवलाली' द्वारा दोनों समय प्रवचनसार के दूसरे अधिकार (ज्ञेयतत्त्व प्रज्ञापनाधिकार) के आधार से विशिष्ट कक्षा ली जायेंगी।

साथ ही दिनांक 15 से 25 जुलाई तक श्री दिनेशभाई शाह द्वारा लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की तथा डॉ. उज्जवलाबेन शाह द्वारा कारण-कार्य रहस्य की कक्षाओं का लाभ भी प्राप्त होगा।

इस अवसर पर कक्षाओं का लाभ लेने के लिये जयपुर के बाहर से पधारने वाले साधर्मियों के आवास की नि:शुल्क और भोजन की सशुल्क व्यवस्था रहेगी।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

एकदम नये प्रकाशन छपकर तैयार

डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित **प्रवचनसार अनुशीलन भाग-3** मूल्य -25 रुपये एवं **प्रवचनसार की ज्ञानज्ञेय तत्त्वप्रबोधिनी टीका** मूल्य-50 रुपये छपकर तैयार है; साथ ही पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित **चलते-फिरते सिद्धों से गुरु** मूल्य 16 रुपये एवं **जान रहा हूँ देख रहा हूँ** मूल्य 8 रुपये छपकर तैयार है, जो मुमुक्षु मण्डल मंगाना चाहें, तत्काल लिखें। जिनका पत्र पहले मिलेगा, उन्हें पुस्तकें पहले भेजी जायेंगी।

ह्न **प्रकाशन विभाग**

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.)

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127